Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 09, (फरवरी, 2025)
पृष्ठ संख्या 41–43

जलवायु अनुकूल और आजीविका के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली में पशुधन का महत्व

अमलेन्दू कुमार एवं रामा शंकर सिंह,
रा0प्र0के0कृ0वि.पूसा के अन्तर्गत तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली, बिहार, भारत।
Email Id: – amlendu99@gmail.com

एकीकृत कृषि प्रणाली ऐसी व्यवस्था है जिसमें कृषि के विभिन्न उद्यमों हो जैसे की फसल वानिकी पशुधन या पशुपालन मुर्गी पालन मछली पालन मधुमक्खी पालन मशरूम उत्पादन केंचुआ खाद उत्पादन आदि का इस तरह समायोजन किया जाता है कि वे एक दूसरे के पूरक हो एवं समिति संसाधनों की क्षमता बढ़ाकर उत्पादकता में वृद्धि कर सके जिससे कृषि लाभकारी हो सके। इस प्रणाली के अंदर विभिन्न उद्यम एक दूसरे पर अंतर निर्भर होते हैं मतलब एक उद्यम का उत्पाद एवं सह–उत्पाद दूसरे उद्यम में प्रयोग हो सके एवं इनके बीच आपसी तालमेल बना रहे साथ ही साथ दीर्घ काल तक आय में वृद्धि हो।

एकीकृत कृषि प्रणाली के अंतर्गत पाले गए पशुधन किसानों को प्रति इकाई समय में प्रति इकाई क्षेत्र में आर्थिक उपज बढ़ाने का अवसर प्रदान करती है। पारंपरिक फसल प्रणालियों किसानो की घरेलू आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती है और उन्हें अब एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाने की आवश्यकता है। इस प्रणाली से अनेकों लाभ जैसे उपज में वृद्धि, उत्पादन लागत में कमी, उत्पादन स्तर को लंबे समय तक बनाए रखने में मददगार, किसान परिवार के सभी पोषक तत्वों की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम, पर्यावरण प्रदूषण को कम रखने में मदद, खेत से निकलने वाले कचरे का प्रभावी पुनचक्रण वर्ष भर आय का स्रोत, ऊर्जा संरक्षण में रोजगार की समस्याओं को कम करने में एवं इनपुट दक्षता में वृद्धि करने में मददगार है।

हमारा देश भारत गाँवों का देश है एवं इसकी पूरी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है और देश की कृषि पूरी तरह आधारित है पशुधन पर। देश में पशुधन की संख्या बीसवी पशुधन जनगणना जो वर्ष 2019 मैं हुआ है उसके अनुसार करीब 537 करोड़ है। पशुधन में दुधारू गायों की हिस्सा करीब 36% है, भैंस 20% है, बकरी 27% है एवं भेंड– सूअर 17% है। विश्व में भारत पशु एवं बकरी की आबादी में दूसरा स्थान पर है जबकि भैंसों की जनसंख्या में पहले स्थान पर है। भेड़ तीसरे स्थान पर एवं पोल्ट्री में सातवां स्थान है। पशुधन से करीब 13 करोड लोगों को प्रतिवर्ष रोजगार प्राप्त होता है। 21वीं सदी में कृषि आधारित आजीविका को अपना कर पशुधन को खेती में एकीकृत करके जलवायु परिवर्तन का सामना के लिए तैयार रहना होगा तभी पर्यावरणीय अनुकूल रह पायेगा।

भारत के कुल जी.डी.पी. में पशुधन का अंशदान करीब 4.11 प्रतिशत है एवं कृषि जी.डी.पी. में करीब 26%का योगदान देता है। आज हमारा देश दुग्ध उत्पादन में विश्व में सर्वाधिक है। इस उत्पादन में विदेशी गाय, क्रसनस्ल गाय, देशी गाय, गैरवर्णनात्मक गाय, भैंस एवं बकरी की अग्रणीय भूमिका है। इसके अलावा मांस, अंडा, मछली आदि भी अच्छे स्तर पर उत्पादित हो रहे हैं। हमारा देश आज अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर है फिर भी देश के सामने पोषण सुरक्षा एवं प्रदूषण की समस्या बहुत ही विकट है जिसके लिए एकीकृत खेती सर्वोत्तम उपाय सिद्ध हो रहा है। पशुधन में पूरी शक्ति है कि यह उद्यम मनुष्यों को उत्तम कोटि

के खाद्य पदार्थ प्रदान कर सकता है और आज कर भी रहा है क्योंकि उपभोक्ता अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग है।

एकीकृत खेती प्रणाली में पशुधन का समावेश कर सालों भर रोजगार के साथ नियमित आय की प्राप्ति हो रही है। एकीकृत खेती में उपलब्ध जमीन को फसल चक्र एवं पशुधन उद्यमों को एक निश्चित अनुपात में रखते हैं जिससे पूरे फार्म की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इसके लिए सर्वप्रथम पूरे फार्म को उद्यम के अनुसार बंटवारा करते हैं एवं साथ–ही–साथ जमीन को भी आवंटित कर लेते हैं। उदहारण हेतु फार्म में जल संग्रह हेतु तालाब जिसमें मछली पालन, बत्तख पालन, मखाना उत्पादन, सिंघाड़ा उत्पादन के साथ जानवरों एवं खेत के लिए पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करते है। इसके बाद उसी फार्म में हम फसल चक्र खरीफ एवं रबी के लिए जमीन सुनिश्चित कर लेते हैं जिसमें विभिन्न प्रकार की फसलों की खेती सालों भर सुनिश्चित हो सके, उसी फॉर्म में हम एक गव्य इकाई के लिए जमीन आवंटित कर लेते हैं, फार्म में केंचुआ खाद, आवश्यकता अनुसार सुकर इकाई, बकरी इकाई, मुर्गी पालन इकाई आदि को भी सुनिश्चित करते हैं। उदाहरण के लिए पूरे फार्म को 100:0 मान ले और उसमें 50:0 हिस्सा फसल चक्र के लिए 35:0 हिस्सा गव्य इकाई के लिए 10:0 हिस्सा तालाब के लिए एवं 15:0 हिस्सा अन्य इकाइयों के लिए आवंटित कर लेते हैं। सभी प्रारूप के उद्यमों एवं उनसे प्राप्त आय का विवरण बनाना होता है। इस तरह की प्रणाली अपनाने से यह खुशहाली के साथ साथ लगातार आमदनी का स्रोत प्रदान करता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि अगर प्राकृतिक आपदा आये तो एक से अधिक उद्यम के वजह से आपकी आमदनी एवं जीविकोपार्जन में कोई ज्यादा प्रभाव नहीं हो सकता है। इस प्रणाली को अपना कर भूमि की उर्वरता के साथ अनेकों तरह के कृषि उत्पाद को प्राप्त किया जा सकता है। इससे खाद्य एवं पोषण की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सकता है।

फसलों का चुनाव ऐसा करें ताकीकी यह आपके परिवार एवं पशुधन की पोषण जरूरतों को पूरा कर सके। अगर आप फसल आधारित प्रणाली में पशुधन को ज्यादा समावेश करते हैं तो आपको ज्यादा मुनाफा होगा एवं आप पूरे वर्ष हरे चारे के उत्पादन पर विशेष ध्यान देंगे। फसलों के उत्पादन में उन्नत किस्मों के साथ–साथ संतुलित खाद्य, खरपतवार नाशी, कीटनाशक एवं अन्य क्रियाकलापों को संतुलित मात्रा में करने से अच्छी पैदावार की प्राप्ति हो सकेगी ज्यादा से ज्यादा कोशिश करें कि जो फसल के लिए वैज्ञानिक सिफारिश है उसको सही तरह से अपनाएँ। खेत के मिट्टी को आवश्यक जांच करवाये साथ ही कंपोस्ट खाद एवं जीवाणु कल्चर का उपयोग करें। आज भी अनेकों किसान भाई ईंधन के रूप में गोबर के उपलों का प्रयोग करते हैं जो अलाभकारी है अगर आप गोबर को गोबर गैस में इस्तेमाल करेंगे एवं उसी गोबर को जैविक खाद में प्रयोग करके बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकेगें। किसान फसल के कटाई के बाद बचे हुए डंठलों को खेत में ही जला देते हैं जो खेती के लिए बहुत ही हानिकारक है इससे खेत का मिट्टी का पोषक तत्व नष्ट हो जाता है साथ ही साथ प्रदूषण भी बढ़ता है। इसके लिए आप खेत में एक बार मिट्टी पलटने के लिए हल चलवा दे जो खेत में खाद का स्रोत बनेगा एवं मिट्टी की उर्वरता कायम रहेगी।

पशुधन में आनेको दुधारू पशु आते हैं अगर आप कम दुग्ध उत्पादकता वाली गाय के स्थान पर विदेशी गाय या शंकर नस्ल की गाय का पालन करें तो आपको अच्छी उत्पादकता प्राप्त होगी। इसके अंतर्गत आपको समय समय पर आवश्यकता अनुसार गर्भधान, उचित भोजन, परजिविनाशी, टीकाकरण आदि पर विशेष ध्यान देना होगा इससे उत्पादकता बेहतर बनी रहेगी एवं व्यवसाय लाभकारी सिद्ध होगा।

इनके खाने के लिए हरा चारा, मिनरल मिक्चर , दाना आदि का समुचित उपयोग करें तो गायों एवं भैंसों के प्रजनन की समस्या कम होगी एवं आप को नुकसान नहीं सहना होगा। एकीकृत प्रणाली में पशुधन के अंतर्गत आप

सुकर पालन भी कर सकते हैं जो कम लागत पर अधिक आय आपको देगा। यह एकमात्र पशु है जो एक बार में 5 से 15 बच्चा देने की क्षमता रखता है एवं इसके मांस की मांग बहुत है। इसके उत्पादन में आपको अच्छी खुराक, मौसम से बचाव एवं कुछ जरूरी सावधानियां को ध्यान में रखना होगा। इसका मल खेतों में खाद के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। आप इस प्रणाली के अंदर बकरी का पालन भी कर सकते हैं जो कि आपको कम लागत पर अच्छी आमदनी प्रदान करेगा। इसके लिए आपको सिर्फ रख–रखाव, पालन–पोषण एवं साधारण आवास की आवश्यकता होगी। इसके उत्पाद की बिक्री बहुत ही आसानी से सभी जगह हो जाता है। इसके पालन से आप मांस, दूध और रोआ का उत्पादन कर सकते हैं। यह बहुत ही अल्पायु में वयस्क होकर 2 वर्षों में कम से कम तीन बार बच्चों को जन्म देगी। यह एक वियान में काम से कम औसतन दो–तीन बच्चे को जरुर जन्म देती है। इसके मल मूत्र खेती में बहुत फायदा कारक है जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। इस प्रणाली के अंदर आप मुर्गी पालन भी कर सकते हैं। इसके पालन के लिए ज्यादा खर्च की आवश्यकता नहीं होती है। एक साधारण रहने की व्यवस्था, समय समय पर टीका आदि ही पर्याप्त है इसके पालन के लिए। यह भी पौष्टिक पदार्थ प्रदान करता है जो की मांस एवं अंडा के रूप में लोग सेवन करते हैं। इसके मल भी खेतों के लिए फायदा कारक हैं। यह खेत में कीड़ा–मकोड़ा खाकर अपना पालन पोषण कर लेती है। इस प्रणाली में बत्तख पालन का भी अपना महत्व है इससे भी अच्छी आय प्राप्त किया जा सकता है। एक उन्नत नस्ल की बत्तख 1 साल में करीब 300 अंडे देती है एवं एक अंडे का वजन कम से कम 65 ग्राम से 75 ग्राम के बीच होता है। यह पानी में रहना पसंद करती हैं एवं आहार के रूप में घोंघा, रेशेदार पौधा आदि खाना पसंद करती है। मुर्गियों की अपेक्षा बत्तखों में बहुत कम बीमारियां होती है। इसके मल फसलों में खाद का काम करता है। इस प्रणाली के अंदर आप केंचुआ खाद बहुत ही सरल उपाय कर तैयार कर सकते हैं जिससे आपको प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से फसल उत्पादन में लाभ प्राप्ति होगा साथ–ही–साथ ऑगेनिक पदार्थ की मॉग को भी पूरा कर सकेगें।

एकीकृत कृषि प्रणाली के अंतर्गत आज पशुधन का बहुत ही अधिक महत्व है क्योंकि प्रति इकाई समय में प्रति इकाई क्षेत्र से हम अधिक से अधिक आर्थिक उपज प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रणाली में विभिन्न घटकों को जोड़कर अपशिष्ट पदार्थों को प्रभावि ढंग से पुनचक्रित करने में सफलता हासिल कर सकते हैं। जिससे पर्यावरण प्रदूषण को कम किया जा सकता है इस प्रणाली द्वारा उत्पाद उप–उत्पादों और अपशिष्ट पदार्थ का पुनचक्रण कृषि प्रणाली में स्थिरता प्रदान करेगा साथ ही साथ अंडे,दुग्ध और मांस का उत्पादन पूरे वर्ष सुनिश्चित किया जा सकता है जो पोषण सुरक्षा के साथ आय सृजन में मददगार होगा ।

इस प्रणाली को अपना कर अल्प रोजगार की समस्याओं को प्रभावि ढंग से कम किया जा सकता है। यह प्रणाली वर्ष भर पारिवारिक श्रम को नियोजित करने में सक्षम होगी। टिकाऊ कृषि जो आज चिंता का विषय है जैसे पोषण सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधन सुरक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण को काफी हद तक प्रबंधन किया जा सकता है और आने वाले समय में कृषि संकट से बचाया जा सकता है। पशुधन का एकीकरण में समावेश से आय बढ़ाने, पोषण सुनिश्चित करने में सर्वोत्तम उपाय के तौर पर अपनाया जा सकता है। पशुधन तो कृषि व्यवस्था में नगद पैसे की तरह होता है। इसीलिए एकीकृत खेती में पशुधन पालन एक अत्यंत लाभकारी व्यवसाय के साथ–ही–साथ जलवायु जोखिम के प्रभाव को भी काफी हद तक नियंत्रीत करनेगा। उपभोक्ता भी आज अपने स्वास्थ्य के पति अधिक जागरूक है एवं ऑर्गेनिक उत्पादों की मॉग कर रहे है इसलिए पशुधन का ज्यादा से ज्यादा समावेशी खेती को पर्यावरण अनुकूल और स्वास्थ्यप्रद बनाने के साथ–साथ ग्रामीण आजीविका में लक्ष्यों को पूरा करने में निशचित मददगार सिद्ध हो सकता है।